Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
12
2017
VOL. 143

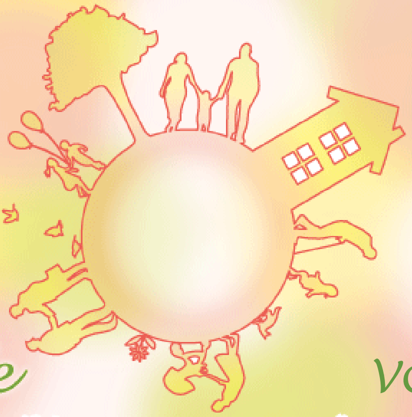

Founder's Essay

# बुद्ध की व्यवस्था

मैं एक और वर्ष के अंत में सुरक्षित और स्वस्थ आ गया हूँ, लेकिन आपमें से कुछ को आर्थिक मंदी, आपदाओं या बीमारियों से पीड़ित रहना पड़ा है और आप ईमानदारी से यह कहने में सक्षम नहीं हैं कि आपका यह वर्ष बिना किसी घटना के बीता है। फिर भी, मुझे लगता है कि जो महत्वपूर्ण है, वह है कि हमने एक वर्ष को कठिनाई में ब्यतीत किया है। बुद्ध का आश्वासन है कि वे अपने बच्चों के रूप में हमारी रक्षा करेंगे। बुद्ध के शब्दों में पूरा विश्वास रखें।

बुद्ध हमेशा दु:ख के स्वरूप को समझते हैं जिसे हमें सहना पड़ता है। बुद्ध का पूर्ण विश्वास है कि हम उनके बच्चों को प्रर्याप्त से अधिक सहने की शक्ति है।

जैसेकि माता पिता अपने बच्चे को स्वस्थ एवं हृष्टपुष्ट रखने के लिए जो प्रबन्ध करते हैं वह उनकी इच्छा के विपरीत होता है। बुद्ध हमें ठीक वही देते हैं जो उस समय सबसे अधिक आवश्यक है।

जापानी शब्द, अन्नोन-बूजी का अर्थ है कुछ भी बिल्कुल बुरा नहीं होता है; बौद्धों के परिप्रेक्ष्य में, हालांकि, इसका आशय है कि आपके पास जो कुछ भी घटित हो रहा है उसे पार करने की आपके पास शक्ति है। समय निश्चित रूप से आएगा जब आपको पता चलेगा कि कठिनाइयाँ आपको ऐसी शक्ति देती है, वह बुद्ध की व्यवस्था है।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), pp. 300–301

Living the Lotus
Vol. 143 (December 2017)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

*Living the Lotus* is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

*President's Message*

# फॉर्म में दक्ष होना

**निचिको निवानो**

**प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ- काइ**

## फॉर्म एक प्रकार का उपायकौशल्य है

खेल में, जैसे जुडो और केंडो, और दृश्य और प्रदर्शनकारी कलाओं में शारीरिक माँसपेशियों को बनाना या चालढाल के प्रदर्शन के मॉडल को “फ़ॉर्म” कहा जाता है।

मेरे विचार में, यद्यपि फॉर्म इन क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट है कि हम अपने दैनिक जीवन में स्वयं को कैसे सुखचैन में रख सकते हैं।

उदाहरण स्वरूप, मैं सोचता हूँ कि फॉर्म को पूर्ण रूप में लाना महत्त्वपूर्ण है और आप समयनिष्ठ रहने की आदत बना लें, नित प्रात: उठकर परिवार के सदस्यों को शुभ प्रभात कहें, जब जूतें खोलें, उन्हें ठीक जगह रखें, जब कोई कुछ पूछे, स्पष्ट हाँ में उत्तर दें, इन दैनिक आचार व्यवहार को जीवन में बार बार दुहरायें।

संयोगवश, जापानी शब्द ‘शोसा’ (संस्कृत, क्रिया) जिसका अनुवाद इंगलिश में प्राय: conduct or behavior होता है, उसे बौद्धधर्म में “तीन चीजों की कार्यप्रणाली के बाह्य प्रदर्शन” के रूप में परिभाषित किया गया है: काय,वचन एवं मन। सरल शब्दों में से कहा गया है कि हमारे कार्य और शब्द मन की अवस्था की एक प्रकार की अभिव्यक्ति है।

वह मन की अवस्था क्या है? दैनिक आचरण में मन की कौन सी अवस्था महत्त्वपूर्ण है जिसे एक फॉर्म के रूप में परिपक्व किया जाय? उस प्रश्न के उत्तर की शुरूआत मन में दूसरों के प्रति सम्मान और करुणा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। सम्मान और करुणा को आत्मसात करना और इसे अपने मन के फॉर्म के रूप में दैनिक अभ्यास में लाने से करुणा हमारे हृदय में और भी अधिक गहरा उत्कीर्ण होगा।

जीवन की शैली और लय के संदर्भ में, बुद्ध मार्ग पर चलने वालों के लिए, अपने हाथों को एक साथ श्रद्धा से जोड़ना, प्रार्थना करना और प्रात: तथा संध्या को सूत्र का पाठ करना महत्वपूर्ण फ़ार्म का उदाहरण है। ये अभ्यास भी अध्यवसायी का महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनके द्वारा आप अपने सम्मान और कृतज्ञता की भावना को प्रदर्शित करते हैं और इस प्रकार आप एक ऐसा व्यक्ति बनते जा रहे हैं, जो हमेशा सम्मान और कृतज्ञता से भरे मन से जीवन जीते हैं।

जब आप फॉर्म में कुशल हो जाते हैं, फिर भी यदि आपका मन एक क्षण के लिए उलझन में है, तो आप उसे तत्क्षण सम्मान और कृतज्ञता से भरे मन में लौट सकते हैं। इस अर्थ में, फॉर्म को एक प्रकार का निपुण साधन माना जा सकता है, लेकिन वास्तव में यह सीधे सत्य से जुड़ा है जो सम्मान और करुणा है।

# फॉर्म अहंकार हितभाव का अभ्यास है

जब सम्मान और करुणा से भरा मन हमारे दैनिक जीवन का आधार बन जाता है, हम कैसे कार्य करते हैं और व्यवहार करते हैं, इनकी अभिव्यक्ति का पालन करने के लिए किसी मैन्युअल पर निर्भर नहीं करना पड़ता है। इस संसार में कोई भी दो व्यक्ति बिल्कुल समान नहीं हैं, इसलिए यह स्वाभाविक है कि प्रत्येक व्यक्ति के प्रति हमारा सम्मान और करुणा का भाव अलग-अलग रूप में व्यक्त होगा। यद्यपि हमें बताया जाता है कि हम धड़ के नीचे सीधे घुटनों के बल बैठे हुए सूत्र पाठ करने के लिए उचित आसन है, कुछ लोग उस स्थिति में अपने घुटनों को चोट को पहुँचाये बिना बैठ नहीं सकते हैं। बेशक, ऐसे लोग जो सही मुद्रा में नहीं बैठ सकते हैं वे फॉर्म को नकारते नहीं हैं। जैसा कि बौद्ध वाक्यांश “एक सब है, सब एक है” का आशय है कि अपने कार्य को सहलता और व्यवहार के आधार पर विचार या इच्छा करना आवश्यक है।

इस अर्थ में, यद्यपि फॉर्म के कई रूप हो सकते हैं क्योंकि लोगों का व्यक्तित्व अलग-अलग है, कोई भी फॉर्म जो स्वार्थपरक है उसे वास्तव में फॉर्म नहीं कहा जा सकता है। आखिरकार, फॉर्म नियंत्रित करता है उस स्वार्थपरक मन को जो चाहे वह करता है।

कभी-कभी, किसी खास कारण से नहीं, परिवार का कोई सदस्य या परिचित व्यक्ति स्थिति को इस हद तक ले जाता है कि आप उस व्यक्ति के चेहरे को देखना या उसके साथ बात करना नहीं चाहते हैं। ऐसी धारणाओं के साथ, अगर आप उस व्यक्ति को देख लेते हैं और आपका रुख रूखा हो जाता है , जो आप दोनों के लिए अप्रिय होगा। लेकिन, यदि आप अपनी फॉर्म कुशलता के फलस्वरूप, अपने हाथों को जोड़कर आदरभाव से उस व्यक्ति का स्वागत करते हैं और “शुभ प्रभात” कहते हैं, तो जिस अहंकार से आप उस व्यक्ति का चेहरा देखना नहीं चाहते हैं, वह दूर हो जाएगा, और आप अहंकार हितभाव की स्थिति प्राप्त करेंगे। स्वागत करना सौहार्द बनाने की ओर एक कदम है और इसके उस व्यक्ति का मन जिसका आपने स्वागत किया है उसका मन अधिक विनम्र होगा, वनिस्पत उसके कि आपने स्वागत नहीं किया था।

जब आप यह अभिव्यक्ति सुनते हैं, “औपचारिक रूप से,” आप सोच सकते हैं कि इसका आशय कुछ अपरिवर्तनीय या रटी रटायी ढंग से किया है, लेकिन फॉर्म के अनुकूल और सही तरीके से बिना प्रश्न किये कार्य करने के लिए, हम मनुष्य जो अपने परिस्थितियों पर महत्व देने के लिए उपयुक्त हैं, सहजता से, उस पल में, अहंकाररहित हो सकते हैं।

**रिश्शो कोसेइ-काइ में, हम होजा सत्रों में भाग लेते हैं, सूत्र का पाठ करते हैं, और दूसरों को पहले रखने का अभ्यास करते हैं। मुझे लगता है कि सभी शोध पद्धतियों के फॉर्म का महत्वपूर्ण उदाहरण है, निरंतर अभ्यास, जिससे हमें बुद्ध की तरह गहरी करुणा के लोग बनने में मदद मिलेगी, और इस फॉर्म ने रिश्शो कोसी-काई के “खुशी का समीकरण” के इतिहास में समर्थन दिया है।**

From *Kosei*, December 2017. Translated by Kosei Publishing Co.

## The Sutra of the Lotus Flower of the Wonderful Dharma
## Chapter 3: A Parable

# जलते घर का दृष्टान्त

किसी स्थान में एक धनी वृद्ध पुरुष का विशाल घर था। वह उस घर में अपने बच्चों तथा अनेक नौकरों चाकरों के साथ रहता था, लेकिन घर भयानक जीर्ण शीर्ण अवस्था में था। एक दिन अचानक घर में आग लग गयी। वृद्ध पुरुष के बच्चे आग लगने से अनभिज्ञ घर के भीतर खेल रहे थे। वृद्ध पुरुष जो घर के बाहर था, जल्दी से लौट आया और अपने बच्चों को चिल्लाकर आगाह किया कि घर में आग लग गयी है, लेकिन बच्चे खेलने में पूरी तरह से निमग्न थे और पिता के चिल्लाने का ध्यान भी नहीं दिया।

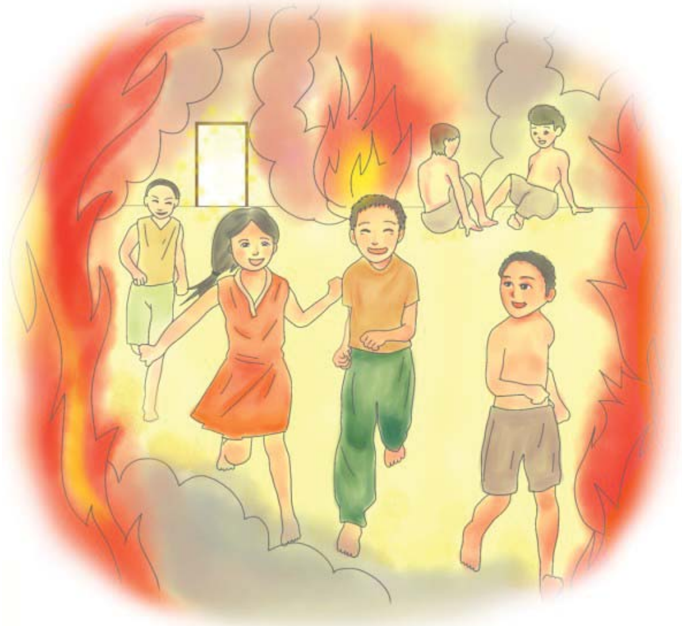

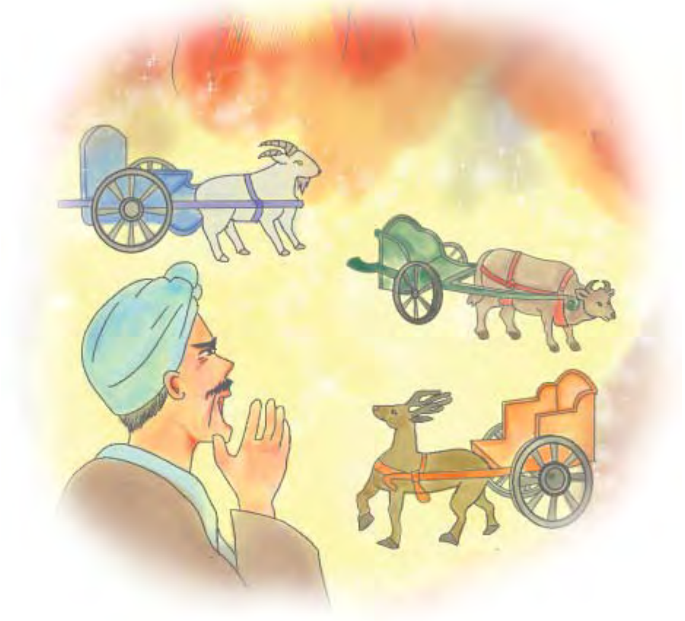

प्रथम, वृद्ध पुरुष ने सोचा कि बच्चों को टेबल पर बैठाकर बाहर निकाल लें।लेकिन पुन: विचार आया कि कहीं कुछ उस क्रम में गिर न जायें। इसलिए उसने बच्चों को आग की विभिषिका बताने और खतरे का अहसास कराने का प्रयास किया, परन्तु उन्होंने वृद्ध पिता की चेतावनी पर भी ध्यान नहीं दिया। तब उसे अन्त में एक उपाय सूझा: “उनको बचाने के लिए मुझे किसी युक्ति का सहारा लेना होगा।” उसने बच्चों को बुलाया और कहा कि तुम सब के लिए अज रथ, मृग रथ और वृषभ रथ हैं जिनसे खेलना पसन्द करते हो, वे तुम्हारे लिए बाहर खड़ी हैं।

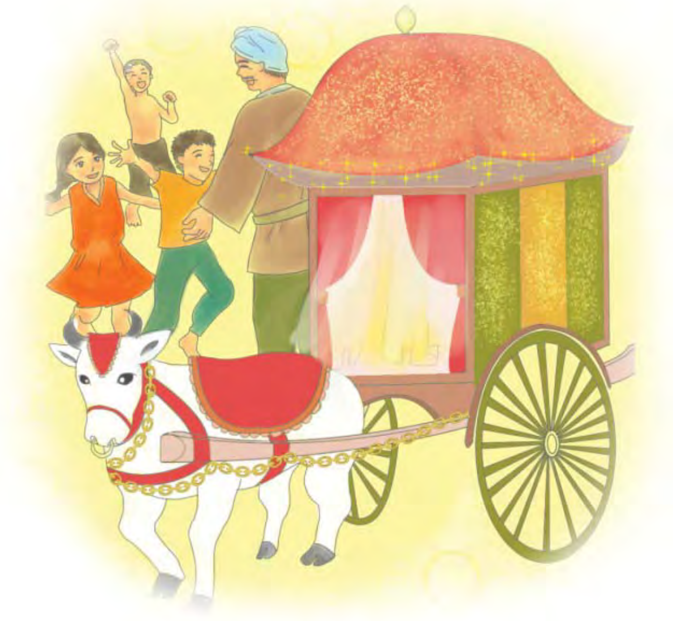

सभी बच्चे आखिरकार स्वयं जलते घर के एक मात्र द्वार से बाहर निकल आये। वृद्ध पिता बच्चों को सुरक्षित देखकर अत्यानन्दित हुआ। बच्चे पिता को कहने लगे: पिता जी, कृपया हमें अज, मृग और वृषभ रथें दें, जिनका आपने वादा किया था। वृद्ध पिता ने उनके आग्रह को पूरा करते हुए उनमें से प्रत्येक को समान महाश्वेतवृषभ रथ दिया जो पूर्व में प्रतिश्रुत तीन प्रकार के रथों से भव्य था।

## व्याख्या

इस दृष्टान्त के वृद्ध पिता के सदृश्य बुद्ध हैं, और उनके बच्चों के समान हमसब हैं। घर का जीर्णशीर्ण होना संसार जिसमें हम हैं  उसकी डँवाडोल स्थिति को दर्शाता है। आग का लगना मानव शरीर के दु:ख दर्द का प्रतीक है। यह दु:ख दर्द सभी के ऊपर एक न एक दिन पड़ेगा, लेकिन उसके प्रति सजग नहीं हैं और अपनी इच्छाओं में डूबे हैं।

बुद्ध हमें जलते हुए घर से एकनिष्ठ होकर बाहर निकालने की इच्छा रखते हैं। घर में केवल एक गेट है, और यह बहुत ही संकीर्ण है। घर से बाहर निकलने के लिए, हमें स्वयं बुद्ध की कामना का बोध होना चाहिए और हमें स्वयं ही संकीर्ण द्वार से गुजरना होगा। जब तक हम अपने दुःखों से अवगत नहीं हैं, यदि बुद्ध हमें जलते हुए घर से एक टेबल पर ले लेते हैं, वहाँ हमेशा एक खतरा है कि हम बुद्ध के दयालु हाथ पर अपनी पकड़ खो सकते हैं, जो हमारे लिए पहुँच रहा है। बुद्ध हमें अपने दुखों से अवगत करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हम इससे अनजान हैं। कभी-कभी हम बुद्ध के मुखमण्डल पर दृष्टि गड़ाये रखते हैं, लेकिन हम बुद्ध की शिक्षाओं को गंभीरता से सुनने की कोशिश नहीं करते हैं।

अंत में, एक अंतिम उपाय के रूप में, बुद्ध ने हमें अज रथ, मृग रथ एवं वृषभ रथ दिखाया। बुद्ध को सुनकर हमें यह बताना है कि हम तीन रथों के द्वारा निर्देशित शिक्षाओं में किसी भी शिक्षा का चयन कर सकते हैं, जो प्रवृति के अनुकूल है। अंततः हम बुद्ध की शिक्षाओं में रुचि लेना शुरू करते हैं।

जलते घर से स्वयं बाहर निकल आने का मतलब है कि हमने स्वेच्छा से बुद्ध की शिक्षाओं का अभ्यास किया है। हालांकि, हमें अभी तक जलते घर से अपनी मुक्ति का एहसास नहीं है। हमारा मन अपने द्वारा माँगी गयी गाड़ियों में से एक को प्राप्त करने की सांसारिक इच्छा से पूरी तरह से अधिकृत है। फिर भी जब हमने बुद्ध से अपनी उत्कट इच्छा व्यक्त की तो अप्रत्याशित रूप से हम सभी को समान एक महाश्वेतवृषभ रथ—परम बोधज्ञान--दिया गया। इसका मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति  उपयुक्त अभ्यास का संचय कर बुद्ध के बोधिज्ञान को प्राप्त कर सकता है।

बुद्ध हमेशा हमारे बारे में अपने प्रिय बच्चों के समान चिंतित रहते हैं और हमें कष्टों से मुक्त करने की कोशिश करते हैं। असल में, हमारा संसार दुनिया दु:ख से भरा है। बुद्ध जलते हुए घर में कूद गए और हमें दिखा रहे हैं कि हम सभी बुद्धत्व एक साथ प्राप्त कर सकते हैं।

Editorial Supervision by Chuo Academic Research Institute

## Greetings from Rev. Mizutani

# पिछले छह वर्षों के लिए हार्दिक आभार गहन

मुझे यह कहते हुए दुख है कि रिश्शो कोसेइ-काइ मुख्यालय में प्रबंधकीय कर्मियों की आयु सीमा प्रणाली के अन्तर्गत मैं रिश्शो कोसेइ-काइ इंटरनेशनल (आरकेआई) के निदेशक के रूप में वर्तमान पद से निवृत हो जाऊँगा। मैं पिछले छह वर्षों के दौरान आपके बहुमूल्य सहयोग के लिए आप सबको अपना हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूँ। इन वर्षों में मैं बहुत खुश था। मैं आपके साथ सम्पर्क में दिल को छूने वाली सभी यादों को कभी भी नहीं भूला पाऊँगा और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में आपके साथ धर्म की खुशियों को साझा करूँगा।

इस समय, मुझे दक्षिण एशिया प्रसार क्षेत्र के निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है और साथ ही बैंकॉक के रिश्शो कोसेइ-काइ के मंत्री भी हैं। जैसा कि सभी मानते हैं, रिश्शो कोसेइ-काइ की शिक्षा वास्तव में अमूल्य और अद्‌भुत है। मैं नए स्थान पर जितना संभव हो उतने लोगों के साथ इस अद्‌भुत शिक्षा को साझा करना चाहूँगा। यह कितना रोमांचक है!

आरकेआई के नए निदेशक रेव कोइची साइतो हैं। वह मेरे सबसे करीबी मित्रों में से एक हैं और एक उत्कृष्ट मंत्री हैं। पिछले बीस वर्षों से वह जापान के अंदर और बाहर के कई धर्म केंद्रों में मंत्री के रूप में सेवा कर रहे थे, जिनमें न्यूयॉर्क एक है। वे शरीर और दिल दोनों से बड़े है। मुझे पूरा विश्वास है कि उनके नेतृत्व में इस शिक्षा का आगे और व्यापक प्रचार होगा।

कृपया आप हर कोई अपना अच्छी तरह ख्याल रखें। और आइए हम धर्म की खुशी को जितना संभव हो उतने लोगों के साथ साझा करें, जब तक हमारी जिंदगी चल रही है। अंत में, मैं दोहराना चाहूँगा, “बहुत बहुत धन्यवाद”!

*Rev. Saito (left) and Rev. Mizutani (right).*

Director's Column

# नमस्कार ! मैं आपके साथ काम करने के लिए आगे देख रहा हूँ!

मैं कोईची साइतो हूँ। मैंने 1 दिसंबर को रिश्शो कोसेइ काइ इंटरनेशनल के निदेशक के रूप में काम करना प्रारंभ किया है। मैं यूसुके साइतो का पिता हूँ, जिन्होंने नवम्बर के अंत तक रिश्शो कोसेइ काइ इंटरनेशनल के स्टाफ सदस्य के रूप में काम किया है। मैं विदेशों में धर्म के प्रसार प्रसार के लिए काम करने का सुअवसर पाकर बहुत खुश हूँ।

मैं निगाता प्रीफेक्चर के सुइबारा के धर्म केन्द्र (वर्तमान शिबाता धर्म केंद्र) में, न्यूयॉर्क में, टोक्यो के सुमीदा और हिरोशिमा के सुबारा में धर्म केंद्र के संचालक के रूप में सेवा करने से पूर्व सोलह वर्षों तक विभिन्न धर्मों के बीच समन्वय वार्ता की उन्नीस वर्षों की अवधि आतंकवाद के पीड़ितों की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने और शांति के मूल्य की नये सिरे से प्रशंसा करने का समय था।

जैसाकि मैं संसार में धर्म का प्रचार प्रसार करने की भूमिका निभाने के लिए नियुक्त हुआ हूँ, मैं पुण्डरीक सूत्र का सम्पूर्ण संसार में विस्तृत प्रचार प्रसार में मदद के लिए हर कदम आगे रखना चाहता हूँ। यह एक दिव्य मिशन है, जो कि रिश्शो कोइ काइ को संस्थापक के गुणों के माध्यम से मिला है।

आइए हम एक साथ इस युग के अनुरूप उपयुक्त मानव संसाधनों को विकसित करें अर्थात्, संम्पूर्ण संसार में बोधिसत्व की संख्या बढ़ानी है, जो रिश्शो कोसेइ काइ का एक पावन मिशन है!

कोइची साइतो
रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय बिभाग निर्देशक

**श्री कोइची साइतो का संक्षिप्त जीवन वृतान्त**

श्री कोइची साइतो का जन्म टोकियो में 1957 ई० में हुआ था। वे रिश्शो कोसेइ काइ के गाकुरिन सेमिनरी से 1982 में स्नातक होने के बाद, जापान के रिलिजियन फॉर पीस के जापान सचिवालय में काम किया।तदुपरान्त रिश्शो कोसेइ काइ के मुख्यालय में आ गये, जहाँ धार्मिक समन्वय सहयोग के कार्य को बारह वर्षों तक देखते रहे। वे उन दिनों फ्रैन्कफर्ट में अन्तर्राष्ट्रीय एसोसिएशन फॉर फ्रीडम में भी काम कर रहे थे। 1998 से धर्म के प्रचार प्रसार के लिए क्षेत्रीय निदेशक एवं धर्मप्रचारक के रूप में जापान के अनेक स्थानों तथा विदेश में कार्य किया।

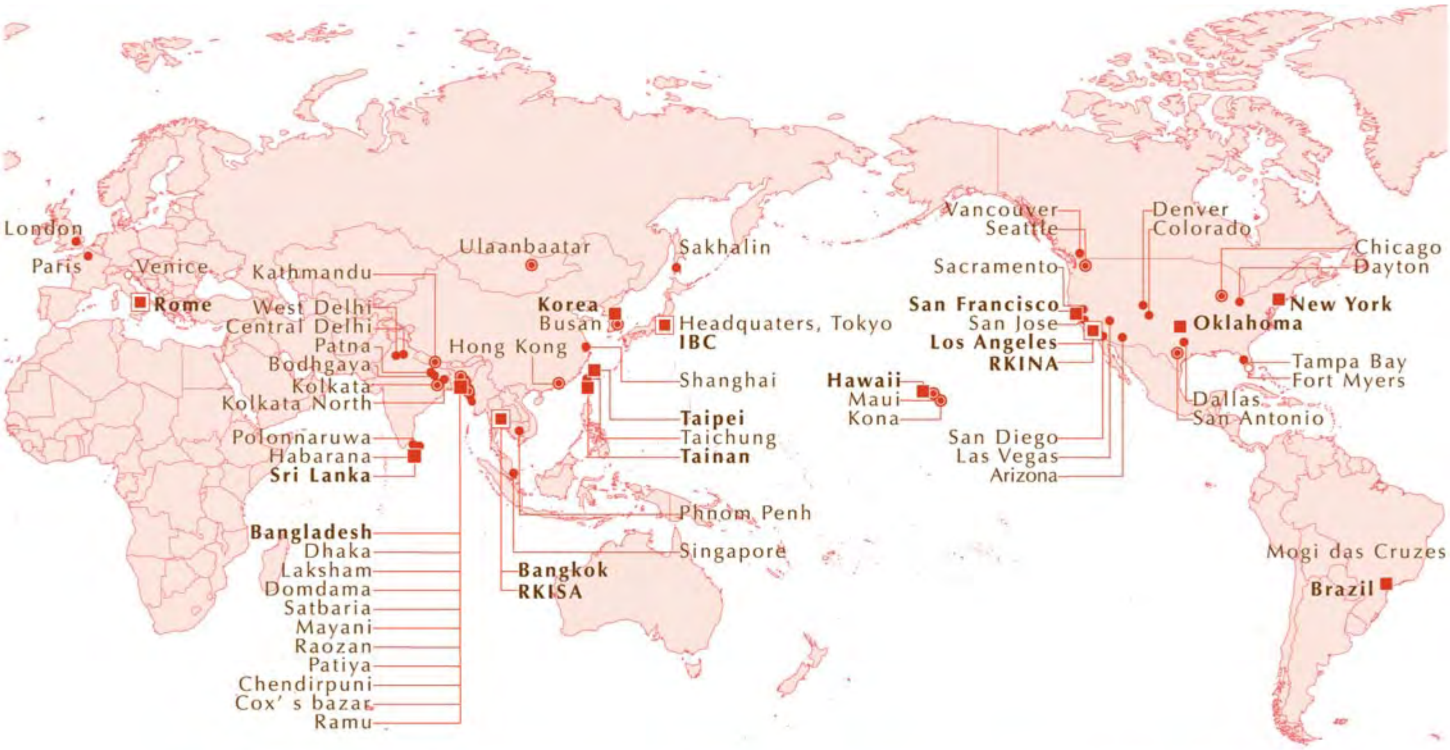
London
Paris
Venice
Rome
Kathmandu
West Delhi
Central Delhi
Patna
Bodhgaya
Kolkata
Kolkata North
Polonnaruwa
Habarana
Sri Lanka
Bangladesh
Dhaka
Laksham
Domdama
Satbaria
Mayani
Raozan
Patiya
Chendirpuni
Cox' s bazar
Ramu
Ulaanbaatar
Sakhalin
Korea
Busan
Hong Kong
Headquaters, Tokyo
IBC
Shanghai
Taipei
Taichung
Tainan
Phnom Penh
Singapore
Bangkok
RKISA
Hawaii
Maui
Kona
Vancouver
Seattle
Sacramento
San Francisco
San Jose
Los Angeles
RKINA
San Diego
Las Vegas
Arizona
Denver
Colorado
Chicago
Dayton
New York
Oklahoma
Tampa Bay
Fort Myers
Dallas
San Antonio
Mogi das Cruzes
Brazil

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

We welcome comments on our newsletter *Living the Lotus*: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

# Rissho Kosei-kai
# Overseas Dharma Centers 2017

---

**Rissho Kosei-kai International**
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
*Tel:* 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

**Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)**
2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A
*Tel:* 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
*e-mail:* info@rkina.org http://www.rkina.org

**Branch under RKINA**

**Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center**
28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
*Tel:* 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio**
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
*Tel:* 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
*e-mail:* dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

**Rissho Kosei-kai of Tampa Bay**
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
*Tel*: (727) 560-2927 *e-mail*: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

**Rissho Kosei-kai of Vancouver**

**Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii**
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
*Tel:* 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
*e-mail:* info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

**Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center**
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
*Tel:* 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

**Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center**
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
*Tel:* 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles**
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
*Tel:* 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
*e-mail:* rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
**Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

**Rissho Kosei-kai of San Francisco**
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
*Tel:* 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
*e-mail:* info@rksf.org http://www.rksf.org

**Rissho Kosei-kai of Sacramento**
**Rissho Kosei-kai of San Jose**

**Rissho Kosei-kai of New York**
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
*Tel:* 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
*e-mail:* rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

**Rissho Kosei-kai of Chicago**
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
*Tel :* 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

**Rissho Kosei-kai of Fort Myers**
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

**Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma**
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
*Tel & Fax:* 1-405-943-5030
*e-mail:* rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

**Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver**
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
*Tel:* 1-303-446-0792

**Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton**
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

**Risho Kossei-kai do Brasil**
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
*Tel:* 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
*Fax:* 55-11-5549-4304
*e-mail:* risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

**Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes**
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
*Tel:* 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

**Rissho Kosei-kai of Taipei**
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
*Tel:* 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

**Rissho Kosei-kai of Pingtung**

**Rissho Kosei-kai of Tainan**
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
*Tel:* 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

**Rissho Kosei-kai of Taichung**

**Korean Rissho Kosei-kai**
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
*Tel:* 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
*e-mail:* krkk1125@hotmail.com

**Korean Rissho Kosei-kai of Busan**
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
*Tel:* 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

**Branches under the Headquarters**

**Rissho Kosei-kai of Hong Kong**
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

**Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar**
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
*Tel:* 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

**Rissho Kosei-kai of Sakhalin**
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
*Tel & Fax:* 7-4242-77-05-14

**Rissho Kosei-kai di Roma**
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
*Tel & Fax :* 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

**Rissho Kosei-kai of the UK**
**Rissho Kosei-kai of Venezia**
**Rissho Kosei-kai of Paris**

**International Buddhist Congregation (IBC)**
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
*Tel:* 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
*e-mail:* ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

**Rissho Kosei-kai of South Asia Division**
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
*Tel:* 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

**Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)**
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
*Tel*: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
*e-mail*: thairissho@csloxinfo.com

**Branches under the South Asia Division**

**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

**Rissho Kosei-kai of West Delhi**
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata**
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata North**
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

**Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center**
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

**Rissho Kosei-kai of Kathmandu**
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

**Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center**
**Rissho Kosei-kai of Singapore**

**Thai Rissho Friendship Foundation**
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

**Rissho Kosei-kai of Bangladesh**
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
*Tel & Fax:* 880-31-626575

**Rissho Kosei-kai of Dhaka**
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
*Tel:* 880-2-8413855

**Rissho Kosei-kai of Mayani**
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Patiya**
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Domdama**
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar**
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Satbaria**
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Laksham**
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Raozan**
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Chendirpuni**
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Ramu**

**Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
*Tel:* 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

**Rissho Kosei-kai of Habarana**
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

**Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**

**Other Groups**
**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**